

डॉ. गैरी मीडर्स, ईश्वर की इच्छा को जानना, सत्र 3, ईश्वर की इच्छा के बारे में चर्च की समझ के पैटर्न

© 2024 गैरी मीडर्स और टेड हिल्डेब्रांट

ईश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबिल धर्मशास्त्र पर इन व्याख्यानों में आपका स्वागत है। मुझे उम्मीद है कि अब तक आप सोच रहे होंगे कि इतने सारे विषय क्यों हैं जो मुख्य रूप से उस प्रश्न से संबंधित नहीं लगते हैं। मैं आपके प्रश्न का उत्तर बहुत जल्दी नहीं दे रहा हूँ।

खैर, मुझे उम्मीद है कि आप देख सकते हैं कि हम एक आधार बना रहे हैं, एक आधार जो परिवर्तित मन के इस मुद्दे के संदर्भ में है, बाइबल के दृष्टिकोण से निर्णय लेने और हमारी संस्कृति के साथ इसकी बातचीत और ऐसा करने की कोशिश में शामिल शोध। अब, यह व्याख्यान GM3 है, और इसे चर्च विवेक के पैटर्न कहा जाता है। मैं यहाँ इस विशेष प्रस्तुति में जो कर रहा हूँ वह आपको कुछ तरीकों से सचेत करना है कि किस तरह से चर्च अपने बड़े स्थल में परमेश्वर की इच्छा जानने के मुद्दों से निपटने के लिए आगे आया है।

आम तौर पर, लोग व्यक्तिगत आधार पर ईश्वर की इच्छा जानने के बारे में सोचते हैं, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि कभी-कभी मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति व्यक्तिवाद पर इतनी केंद्रित है कि उसे यह एहसास ही नहीं होता कि यह चर्च ही है जो अपने सबसे बड़े अर्थ में वास्तव में महत्वपूर्ण है। और इसलिए, मैं इस समय व्याख्यान 3 में, ईश्वर की इच्छा के बारे में चर्च की समझ के पैटर्न के बारे में बात करना चाहता हूँ, जिसमें मैं आपको कुछ विचार दूंगा और, ज़ाहिर है, ये सभी चीजें आप खुद भी अपना सकते हैं। तो, आपके पास GM3 स्लाइड होनी चाहिए। बहुत ज़्यादा स्लाइड नहीं हैं, लेकिन एक विस्तृत नोट पैकेज है।

इसलिए, सुनिश्चित करें कि आपके पास GM3 नोट्स भी हों ताकि जब हम इस पर चर्चा करें तो वे आपके साथ हों। हमेशा की तरह, मैं नोट्स देखूँगा। मैं उन्हें सिर्फ़ आपको पढ़कर नहीं सुनाऊँगा, हालाँकि मुझे शायद इसे और भी पढ़ना चाहिए क्योंकि वाक्य सावधानी से तैयार किए गए हैं, लेकिन फिर भी, हम इसे पूरा करेंगे।

मैं इस विशेष क्षेत्र में अधिक जानकारी देने का प्रयास कर रहा हूँ। क्षमा करें। ठीक है।

तो, नोट्स के पहले पृष्ठ पर इस मुद्दे से संबंधित है, और यदि आप बस वहाँ देखें, तो मैं इसे कई लोगों द्वारा यह पूछकर शुरू करता हूँ कि ईश्वर की इच्छा क्या है, और फिर आप रिक्त स्थान भर देते हैं। और वह प्रश्न, जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, आम तौर पर व्यक्तिगत क्षेत्र में अधिक होता है, न कि बड़े क्षेत्र में। और फिर भी, बड़ा क्षेत्र, कई मायनों में, अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है।

लेकिन व्यक्तिगत रूप से हमारे लिए, क्या मुझे शादी करनी चाहिए? क्या मुझे कॉलेज जाना चाहिए? और मुझे कहाँ जाना चाहिए? मुझे कौन सा करियर अपनाना चाहिए? क्या मुझे करियर में बदलाव पर विचार करना चाहिए? मुझे इस चुनाव में किसे वोट देना चाहिए? पिछले चार्ट पर

मौजूद सभी आइटम एक बार फिर व्यक्तिगत रूप से सामने आते हैं, लेकिन चर्च को अन्य चीजों से निपटना पड़ता है जहाँ चर्च एक मण्डली के रूप में, एक संप्रदाय के रूप में, लिंग के संबंध में, कामुकता के संबंध में, युद्ध के संबंध में, और इतने सारे बड़े विषयों पर सहमति बनाते हैं जिनमें से प्रत्येक पर साहित्य का एक विशाल भंडार है जो इस सवाल पर बहस करता है कि आप युद्ध और लिंग की उन श्रेणियों और संस्कृति, राजनीति, शिक्षा, और इसी तरह के अन्य सभी बड़े मुद्दों को कैसे समझते हैं। चर्च के इतिहास में, ईश्वर की इच्छा को समझने का इतिहास बाइबल के उचित अनुप्रयोग और चर्च के सर्वसम्मति निर्णय दोनों में है जब बाइबल कोई प्रत्यक्ष निर्देश नहीं देती है। अमेरिका में, हमारे पास व्यक्तिवाद का इतना लंबा इतिहास है।

हमारे पास स्वतंत्रता का इतना लंबा इतिहास है, और हम इसे बाइबिल की श्रेणियों में जबरन शामिल कर देते हैं। हम चर्चों को निर्णय लेने वाला नहीं मानते। हम खुद को एक चर्च या एक व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो निर्णय लेता है।

लेकिन बाइबल के समय में ऐसा नहीं हुआ, न ही चर्च के इतिहास में ऐसा हुआ है। तो, आइए इस पर विचार करें और सोचें कि चर्च ने परमेश्वर की इच्छा की खोज को किस तरह वर्गीकृत और परिभाषित किया है। ठीक है, चर्च ने विवेक की प्रक्रिया करते समय जिन श्रेणियों की जाँच की है।

हम अपने हैंडआउट्स में कई तरह की चीजें देखेंगे। मैं जिन श्रेणियों के बारे में बात करने जा रहा हूँ, चर्च ने उनकी जाँच की है, वे पेज एक से तीन पर हैं। जैसा कि आप देख सकते हैं, मैंने इसे स्लाइड पर नोट किया है।

श्रेणियों की पहचान की गई है। हम पेज एक से तीन पर श्रेणियों की पहचान करने के बारे में बात करने जा रहे हैं, और पेज तीन से पांच पर श्रेणियों को चित्रित करने के बारे में बात करने जा रहे हैं। ठीक है, श्रेणियों की पहचान।

जैसा कि आप उम्मीद कर सकते हैं, चर्च के इतिहास में सबसे प्रमुख उपयोग पवित्रशास्त्र का है। पूरी बाइबल दुनिया में ईश्वर की इच्छा को समझने के लिए हमारी प्रमुख श्रेणी है, खासकर तब जब हमारे पास इसके बारे में कोई प्रत्यक्ष शिक्षा नहीं होती है, लेकिन हम निहितार्थों और संरचनाओं पर काम कर रहे होते हैं। और पवित्रशास्त्र के साथ और बड़े चर्च में उठाए गए सवालों के साथ, तर्क एक क्लासिक तर्कसंगत प्रक्रिया है।

पवित्रशास्त्र में शोध करना ही तर्क को दर्शाता है। हमारे पास बहुत बड़ी-बड़ी लाइब्रेरी हैं। बाइबल अध्ययन और धर्मशास्त्र शायद दुनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी में से कुछ हैं।

मैं शिकागो में एक पुस्तकालय में जाता था, जो लगभग छह स्कूलों का संघ था, और इसमें धर्म पर लगभग दस लाख खंड थे। मैं पत्रिकाओं में शोध करता था, और यह पत्रिकाएँ और पुस्तकें थीं। पश्चिमी दुनिया में साहित्य का एक विशाल भंडार इस बारे में चर्च क्या सोचता है, इस बारे में सवालों के जवाब देने के लिए तैयार किया गया है। चर्च इस बारे में क्या सोचता है? परंपरा, प्रेरित पिताओं से लेकर आधुनिक दुनिया में संप्रदायों के विकास तक, और 1600 के दशक में इतना

आधुनिक नहीं, निश्चित रूप से कम से कम, हमारे पास परंपरा के कुछ हिस्से हैं कि चर्च की छत्रछाया में चर्चों द्वारा बाइबल को कैसे देखा जाता था, बड़े चर्च।

मैं यहाँ रोमन कैथोलिक चर्च के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ, बल्कि मैं मसीह के शरीर के बारे में बात कर रहा हूँ, चाहे वह कहीं भी हो। और फिर अनुभव है। हम सभी ईसाई धर्म में जीने की प्रक्रिया में कुछ अनुभव अर्जित करते हैं, और वे अनुभव हमारे लिए डेटा बन जाते हैं ताकि हम अपने सामने आने वाले सवालों का मूल्यांकन कर सकें।

हम कई बार धार्मिक प्रणालियों और संप्रदायों द्वारा अनुभवों को चित्रित करते हैं, जो बड़ी परंपरा का हिस्सा हैं, और फिर आपके पास ये सभी छोटी परंपराएँ हैं। इसलिए, विभिन्न समूहों ने नेतृत्व किया है, जो प्रारंभिक चर्च में परिलक्षित होता है, और एक ऐसी प्रक्रिया बनाई है जिसे कई लोगों ने अपनाया है। यह पश्चिमी दुनिया में दिलचस्प है, एंग्लिकन जॉन वेस्ले।

आप मेथोडिज्म के दृष्टिकोण से वेस्ले के बारे में सोचते हैं, जो चर्च उनसे निकले हैं, लेकिन वेस्ले ऑक्सफोर्ड से काफी विद्वान थे, और उन्होंने जो विकसित किया वह वेस्लेयन चतुर्भुज के रूप में जाना जाता है। और क्राड, ज़ाहिर है, का अर्थ है चार, इसलिए यह सिर्फ एक फैंसी शब्द था जिसके बारे में हमने अभी बात की: शास्त्र, तर्क, परंपरा और अनुभव। और यह मुद्दों से निपटने में एक प्रमुख चर्च गिड बन गया।

उदाहरण के लिए, यदि आप युद्ध को इसमें शामिल करते हैं, और यह ऐसी चीज़ है जिसमें पूरे चर्च को चिंतित और रुचि होनी चाहिए, तो आप धर्मग्रंथों पर जाएं, आप चर्चों के बीच तर्क-वितर्क करें। यही बात प्रारंभिक चर्च में भी सच थी जब उसने क्राइस्टोलॉजी और ट्रिनिटी इत्यादि का अध्ययन किया था। आप परंपरा को देखते हैं, और आप अनुभव को देखते हैं।

ये सभी बातें उन निर्णयों को लेने में महत्वपूर्ण हैं। उनके सिद्धांत ने तीन ऐसी बातों को लिया जो लंबे समय से मान्यता प्राप्त थीं और एक चौथी बात को सामने लाया, जो निश्चित रूप से उनके लिए अनुभव के पक्ष में थी। अब, मैं यहाँ रोमन कैथोलिक चर्च के मॉडल का प्रतिनिधित्व नहीं करने जा रहा हूँ।

यह पश्चिमी दुनिया का एक बड़ा हिस्सा है, लेकिन यह मेरे अधिकार क्षेत्र में नहीं है। रिचर्ड हेस नामक एक लेखक ने द मोरल विज़न ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट नामक एक पुस्तक लिखी, जो न्यू टेस्टामेंट नैतिकता का एक व्यापक परिचय है। अब, निर्णय लेना नैतिक सोच और चर्चा का एक हिस्सा है।

हमारे सामने अक्सर नैतिकता के सवाल आते हैं, खास तौर पर बड़े चर्च में। इसलिए हम पेज दो और तीन पर इस बारे में थोड़ा सोचते हैं। उदाहरण के लिए, हेस ने इनमें से कुछ बातें बताई हैं।

शास्त्र ही आदर्श है। विद्वान कभी-कभी लैटिन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। यह आपके नोट्स में पेज दो पर है, स्लाइड पर नहीं।

धर्मग्रंथ ही आदर्श है। यह हमेशा आधार होता है। हर कोई दावा करता है कि यह आधार है, और फिर भी हमारे पास विभिन्न प्रकार की राय है।

खैर, हमने इसके बारे में थोड़ी बात की है, और हम और बात करेंगे। इसके उदाहरण में, परमेश्वर की मानक अनिवार्यताएँ, जो आज्ञाएँ हैं, अभी भी पूरे शास्त्र में व्याख्या के अधीन हैं। मोड पर बाद में चार्ट देखें, जिस पर हम बाद में चर्चा करेंगे।

लेकिन मानदंड का मानदंड, और फिर भी हम अभी भी इस पर बहस करते हैं। उदाहरण के लिए, तुम हत्या नहीं करोगे। इसका क्या मतलब है? क्या यह शांतिवाद के लिए एक प्रमाण पाठ है, जिसका अर्थ है कि ईसाई लड़ाके नहीं हो सकते और युद्ध में नहीं हो सकते? हमारे पास ऐसे लोग हैं जो धार्मिक आधार पर युद्ध के प्रति विवेकपूर्ण आपत्ति रखते हैं।

बहुत से देशों ने इसका सम्मान किया है। और फिर आप एक सैनिक हो सकते हैं और लड़ाकू नहीं, जो कि युद्ध के समय में कोई छोटी चुनौती नहीं है। यह उतना ही महत्वपूर्ण है क्योंकि आप उन सैनिकों की देखभाल कर रहे हैं जिनका विवेक उन्हें ऐसा करने की अनुमति देता है।

और फिर बहुत से हैं। उदाहरण के लिए, बैपटिस्ट परंपराओं ने कभी भी गैर-लड़ाकों को उनके लिए एक श्रेणी के रूप में नहीं देखा है। और इसे कई अलग-अलग तरीकों से समझाया गया है। इसलिए, शास्त्र आदर्श मानदंड है।

हम इसे अच्छी तरह जानते हैं। परंपरा। और यह सामान्य रीति-रिवाज़ नहीं है, बल्कि यह विशेष रूप से चर्च की समय-सम्मानित प्रथाओं को संदर्भित करता है।

यह पूजा की पुरानी प्रथाएँ, चर्च और समुदाय के प्रति सेवा और आलोचनात्मक चिंतन है। इतिहास महत्वपूर्ण है। और कई बार, संयुक्त राज्य अमेरिका में कुछ संप्रदाय इतिहास की ज़्यादा परवाह नहीं करते हैं।

मैं एक गैर-ईसाई के रूप में बड़ा हुआ। मैं 60 के दशक में नौसेना में रहते हुए ईसाई बन गया। और मैं ज़्यादातर उन चर्चों से जुड़ा रहा हूँ जिन्हें बाइबल चर्च और बैपटिस्ट चर्च कहते हैं।

और मुझे नहीं लगता कि इनमें से कोई भी संप्रदाय आपको ईस्टर और क्रिसमस के अलावा ईसाई कैलेंडर के बारे में समझा पाएगा। वे उन परंपराओं का पालन नहीं करते हैं जो शुरुआती चर्च और चर्च ने ऐतिहासिक रूप से अपनाई हैं। और हमने उस संबंध में कुछ चीजें खो दी हैं।

हालाँकि, इतिहास महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, न्यायपूर्ण युद्ध सिद्धांत। पहले न्यायपूर्ण युद्ध सिद्धांत में ईसाई देशों में पहले से ही चेतावनी देना स्वीकार्य नहीं था।

अमेरिका पहले हमला नहीं करेगा। दूसरे देश पहले हमला नहीं करेंगे, बल्कि हमला होने पर खुद को तैयार रखेंगे और जवाबी हमला करेंगे। हालाँकि, आतंकवाद के दौर में युद्ध सिद्धांत बदल गया।

जब आतंकवाद हमारी अपनी धरती पर आया, न्यूयॉर्क और कई अन्य स्थानों पर टावरों के साथ, न्यायपूर्ण युद्ध के पूरे विचार पर पुनर्विचार किया गया, विशेष रूप से पूर्वग्रह की श्रेणी में। यहाँ भगवान की इच्छा क्या है? खैर, यही चर्च के बारे में सोच रहा था। ऐसा क्या है जो सबसे अच्छी तरह से दर्शाता है कि भगवान क्या अनुमति देते हैं या क्या नहीं देते हैं? और उन श्रेणियों के बारे में सोचने के मामले में यह काफी रचनात्मक हो जाता है।

बस आराम से बैठ जाना और एक गैर-लड़ाकू दृष्टिकोण अपनाना बहुत आसान होगा। जितना अधिक आप युद्ध में शामिल होना चाहते हैं, उतना ही आपको उस विशेष दृष्टिकोण के लिए कारणों के साथ आना होगा। परंपरा, प्राचीन पंथ, रूढ़िवाद, हठधर्मिता और चर्च के इतिहास में प्रमुख शिक्षकों सहित प्रमुख हस्तियों के उदाहरण में, भगवान ने यीशु का उल्लंघन किए बिना विभिन्न चर्च अभिव्यक्तियाँ दी हैं।

उन सभी लोगों के लिए चेतावनी का उपदेश जो परमेश्वर की आज्ञा को त्याग कर मानवीय परंपरा को मानते हैं। खैर, मुख्य बात यह है कि यीशु ने कहा, तब क्या मेरे सेवक लड़ेंगे जब उसने शिष्यों से कहा कि इसे जाने दो, कि उसे पकड़ लिया जाएगा और सूली पर चढ़ाया जाएगा। जब पतरस ने तलवार निकाली और कान काट दिया, तो यीशु ने उस व्यक्ति को वहीं ठीक कर दिया, बाइबिल के पाठ के अनुसार, और बाद में कहा, तब क्या मेरे सेवक लड़ेंगे?

कई लोगों ने अपनी परंपराओं में शांतिवाद के लिए इसका इस्तेमाल किया है, लेकिन हर कोई इसे इस तरह से नहीं देखता। इसलिए, हमारे पास इस चतुर्भुज के हिस्से के रूप में परंपरा है। इसका कारण परिभाषा है।

तर्क ईश्वर की छवि में निर्मित होने का एक पहलू है, और व्यवस्थित दार्शनिक चिंतन और वैज्ञानिक जांच के माध्यम से समझ हासिल करने से डेटा सामने आता है। हम ऐसा करते हैं, और हम इसे बाइबल में आंतरिक रूप से भी करते हैं। कई बार, मानवीय तर्क सांस्कृतिक तर्क होता है। हमें बाइबल के तर्क के साथ उससे ऊपर उठना होगा, और यही हमारे लिए चुनौती है, ऐसे तरीके खोजना जिसमें बाइबल संस्कृति की व्याख्या करती है और उससे बात करती है और कभी-कभी संस्कृति के खिलाफ बोलती है। ईसाई धर्म को इन दोनों दिशाओं में कई ऐतिहासिक अनुभव हुए हैं।

आज, अमेरिका में चर्च की शक्ति पहले से कम है, और हम कभी-कभी संस्कृति से बात करना भूल जाते हैं। हम अपनी वर्तमान संस्कृति के कुएं से गहराई से पीते हैं, और कुछ क्षेत्रों में संस्कृति के खिलाफ बोलना कुछ ऐसा है जिससे चर्च अब निपटना शुरू कर रहा है। अनुभव।

अनुभव इसका एक हिस्सा है, और यह चतुर्भुज का चौथा भाग है, जिसे वेस्ले ने जोड़ा और जिस पर जोर दिया, लेकिन यह अनुभव आस्था के समुदाय के सामूहिक अनुभव को संदर्भित करता है। यह व्यक्तिवाद के बारे में बात नहीं कर रहा है। यहाँ व्यक्तिवाद नहीं है।

यह विश्वास का समुदाय है जो यरूशलेम की परिषद में नए नियम की तरह एक साथ आता है, और इस तरह की चीजें, जहां समुदाय बात कर रहा है, तर्क कर रहा है, और अपने वर्तमान

परिस्थितियों में भगवान की शिक्षा को लागू करने के तरीके के बारे में ज्ञान के लिए प्रार्थना कर रहा है। इसलिए, जैसा कि दृष्टांत कहता है, निजी तौर पर दावा किए गए रहस्योद्घाटन के अनुभव सामान्य नहीं हैं और चर्च के लिए आदर्श नहीं हैं। चर्च निजी दावों को अधिकार के रूप में नहीं लेता है।

चर्च अधिकार के रूप में सर्वसम्मति की तलाश करता है। प्रेरितों की गवाही आदर्श है, लेकिन यह निश्चित रूप से शास्त्र है। चर्च के इतिहास के लोगों ने आदर्श को प्रभावित किया है, लेकिन हमेशा सहमति में नहीं, जैसा कि आप चर्च के इतिहास से अच्छी तरह से जानते हैं।

प्रेरितिक पिता और प्रेरितिक पिता के बाद के पिता, लूथर और केल्विन परंपरा के एक पहलू के बारे में बात करते हैं। अनुभव पाठ का जीवंत विनियोग है, जो विश्वास में अनुभव किए जाने पर स्वयं प्रमाणित हो जाता है। दूसरे शब्दों में, जब हम अपनी संस्कृति में बाइबल को जीते हैं, तो हम उस अनुभव के माध्यम से सीखते हैं और सीखते हैं कि हम अपनी वर्तमान संस्कृति से निपटने के मामले में क्या कर सकते हैं।

अब, आइए हम वहाँ से थोड़ा आगे बढ़ते हैं। यही इस चतुर्भुज मुद्दे का मुद्दा है। पृष्ठ तीन, अधिकार के उन प्रत्येक स्रोतों, उन चार स्रोतों के साथ धर्मग्रंथों का सही संबंध, धर्मशास्त्र के लिए एक चिरस्थायी समस्या रही है।

विभिन्न ऐतिहासिक युगों में इस चुनौती ने थोड़े अलग रूप धारण किए हैं, लेकिन चर्च को हमेशा इन चार कारकों के बीच संतुलन बनाने के लिए संघर्ष करना चाहिए। इसलिए, ईसाई धर्म में, मैं और मैं नहीं है। यह अमेरिकी कठोर व्यक्तिवाद है। यह अमेरिका में चर्च को बहुत प्रभावित करता है।

व्यक्तिवाद, कठोर व्यक्तिवाद, अमेरिकी संस्कृति का एक हिस्सा है। लेकिन अमेरिका में चर्च को उन चर्चों की समग्रता से ज्ञान के व्यापक आधार की आवश्यकता है जो वास्तव में यीशु की छत्रछाया में हैं और चर्च हैं। कई ईसाइयों, समूहों और संप्रदायों ने मुद्दों को संसाधित करने के लिए चतुर्भुज को एक रूप के रूप में अपनाया है, और हम भी ऐसा ही कर सकते हैं।

हम इसे व्यक्तिगत रूप से कर सकते हैं, लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि आखिरकार चर्च ही संस्कृति के बड़े मुद्दों को संबोधित करने वाला है। आज, कुछ बड़े मुद्दे, निश्चित रूप से, लिंग हैं। मंत्रालय में एक महिला की भूमिका के संदर्भ में लिंग का सरल पहलू नहीं, बल्कि हम ट्रांसजेंडर के संदर्भ में लिंग के बारे में बात कर रहे हैं, यौन श्रेणियों के संदर्भ में जो बहुत बहस का विषय हैं और स्पष्ट रूप से, कई संप्रदायों को संक्रमित कर चुके हैं।

इसलिए, दिन के अंत में, तीसरे पृष्ठ पर, तीसरे पैराग्राफ में, इन श्रेणियों के साथ किए गए सभी विश्लेषणों के बाद भी, हम विविधता पर पहुँचते हैं जो एक ही बाइबिल को पढ़ती है लेकिन इसे अलग तरीके से पढ़ती है। हमारे पास ईसाई परंपरा में शांतिवादी हैं। हमारे पास ईसाई परंपरा में वे लोग हैं जिन्हें हम बाज़ कहते हैं जो सोचते हैं कि किसी भी तरह का संघर्ष और युद्ध और हत्या ठीक है।

जब भी किसी दूसरे इंसान को मारने की बात आती है, तो ईसाइयों को बहुत सावधान रहना चाहिए, लेकिन कुछ लोग ऐसा नहीं करते। कभी-कभी उनमें इस बारे में अमेरिकी क्रूरता होती है। हमें इस बारे में सावधान रहने की ज़रूरत है और सिर्फ़ यह नहीं मान लेना चाहिए कि यह उचित है।

हम इन पाठों में बाइबल की व्याख्या में विविधता के मुद्दे पर चर्चा करेंगे, लेकिन यह इसका एक और बिंदु है। ठीक है, ये पहचानी गई श्रेणियाँ हैं। आइए पृष्ठ तीन पर चित्रित श्रेणियों के बारे में बात करते हैं।

पवित्रशास्त्र ने हमेशा चर्च के लिए अंतिम विजय, क्षमा करें, अंतिम अधिकार को अपने साथ रखा है, जब से इसे बनाया गया है, और यह हमेशा से ही आधार रहा है - हेस के चार तरीकों पर ध्यान दें कि कैसे पवित्रशास्त्र यहाँ मार्गदर्शन प्रदान करता है। हम कहते हैं कि बाइबल हमारा मार्गदर्शक है।

ठीक है, यहाँ इस बारे में सोचने के लिए एक मॉडल है कि बाइबल हमें किस तरह से जानकारी प्रदान करती है। खैर, यह नियमों के अर्थ में, पृष्ठ तीन पर नीचे की ओर जानकारी प्रदान करता है। वह प्रतीकात्मक दुनिया में इन तरीकों, नियमों, सिद्धांतों और प्रतिमानों को कहते हैं। नियम, प्रत्यक्ष आदेश, हम इन्हें अनिवार्य कहते हैं, चाहे सकारात्मक हो या नकारात्मक, ऐसा न करें या वैसा न करें।

तलाक की चर्चा में नियमों के उदाहरण बहुत बार आते हैं, और फिर भी अपवाद में एक पाठ है, मैथ्यू में तथाकथित अपवाद खंड, जिस पर बहुत बहस होती है। अगर हमारे पास वे पाठ नहीं होते, तो कोई बहस नहीं होती क्योंकि बाकी सब कुछ तब तक सहमति में है जब तक हम उन कारणों तक नहीं पहुँच जाते। आप उनसे कैसे निपटेंगे? और यह एक बहुत बड़ा हिस्सा है, जिस पर नियमों के क्षेत्र में भी बहस होती है।

सिद्धांत नैतिक विचार का सामान्य ढाँचा है जिसके द्वारा विशेष निर्णय या कार्य संचालित होते हैं। प्रेम एक सिद्धांत है। यह संभवतः सबसे बड़ा सिद्धांत है, लेकिन समस्या यह है कि आप प्रेम को कैसे परिभाषित करते हैं। क्या आप इसे वैंलेंटाइन डे, अपने दिल पर दिल पहनना, मदर्स डे के संबंध में माताओं को कुछ खास रंग के गुलाब देना, या उन व्यक्तियों की देखभाल करना जैसे परिभाषित करते हैं जिनकी बहुत ज़रूरतें हैं? प्रेम क्या है? हम प्रेम के बारे में थोड़ी देर बाद बात करने जा रहे हैं, लेकिन अभी, प्रेम एक आज्ञा है, और यह एक ऐसी आज्ञा है जिसे यीशु सबसे बड़ी आज्ञा कहते हैं।

परमेश्वर से प्रेम करो, अपने पड़ोसी से प्रेम करो। वह इन दोनों को एक अनोखे तरीके से एक साथ लाता है। पुराने नियम की परंपरा में भी, उन्हें आम तौर पर अलग-अलग देखा जाता था, लेकिन वह उन्हें एक साथ लाता है और हमें ऐसा करने की आज्ञा देता है।

खैर, हमें पूछना होगा, अच्छा, मैं कैसे प्यार करता हूँ? नई आज्ञा है अपने पड़ोसी से प्यार करना, प्यार का आदर्श बनाना। और इसलिए, यह कहना कि आपको प्यार करना चाहिए, कुछ नहीं

कहता। आपको यह सवाल पूछना चाहिए, प्यार क्या है? प्यार करने का क्या मतलब है? अब, मैं इस बारे में अभी बहुत कुछ बात करना चाहता हूँ, लेकिन मुझे खुद को सीमित रखना होगा क्योंकि हम बाद में इस पर बात करेंगे।

प्रेम, सबसे पहले, आप यह जान जाएँगे कि यह एक वाचा शब्द है। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया और परमेश्वर ने हमसे तब भी प्रेम किया जब हम पैदा भी नहीं हुए थे। प्रेम एक ऐसा शब्द है जिसमें लोगों की भलाई को ध्यान में रखते हुए उनके प्रति आगे बढ़ने का निर्णय अंतर्निहित है।

अब, आपको अच्छे शब्द को परिभाषित करना है। अच्छा होने का क्या मतलब है? तो, आप देख सकते हैं कि हम सरल कथन कर सकते हैं, लेकिन उन्हें खोलने पर बहुत सारे सवाल सामने आते हैं। ठीक है।

तो, प्रतिमानों पर ध्यान दें। प्रतिमान यह तीसरा तरीका है। ऐसे चरित्रों की कहानियाँ या विवरण जो अनुकरणीय या नकारात्मक आचरण का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

मैं उत्पत्ति की कहानी में लूत और अब्राहम के नकारात्मक आचरण के बारे में बहुत सोचता हूँ। मेरा मतलब है, लूत को उस समय एकमात्र व्यक्ति होने का सौभाग्य प्राप्त था जिसके साथ परमेश्वर शास्त्र की बातों के संदर्भ में संवाद कर रहा था। अन्य लोग भी थे; मेल्कीसेदेक दृश्य में आया, और यहाँ तक कि बालाम भी जानता था कि प्राचीन दुनिया के बारे में बहुत सारे सवाल थे और शास्त्र में कितना लिखा है और कितना नहीं।

लेकिन सच तो यह है कि अगर हम लूत के बारे में पुराने नियम के कथनों को ही लें और सदोम और अमोरा तथा उसके परिवार और उसकी बेटियों के संबंध में जो कुछ उसने किया, जब परमेश्वर ने सदोम को नष्ट कर दिया, तो उसे अविश्वासी माना जाएगा। लेकिन पतरस ने लूत का उल्लेख किया है। मैं आपको इस बारे में बाद में कुछ बताऊंगा।

पतरस लूत का जिक्र करता है और उस धर्मी व्यक्ति के बारे में बात करता है। वह अपने संदर्भ में धर्मी शब्द का इस्तेमाल लगभग चार बार करता है क्योंकि, स्पष्ट रूप से, हम यह मानने में बहुत धीमे हैं कि लूत एक धर्मी व्यक्ति था। और लूत के धर्मी होने से पतरस का मतलब यह है कि वह परमेश्वर के साथ सही था।

उसने बहुत धार्मिकता से काम नहीं किया। यह हमें बताता है कि लूत की अंतरात्मा और आत्मा दोषी थी क्योंकि वह उन मूल्यों का उल्लंघन कर रहा था जो अब्राहम ने उसे सदोम और अमोरा के शहर को सौंपने से पहले सिखाए थे। और वह गेट पर बैठा था, जिसका मतलब है कि वह राजनीतिक शक्ति और प्रक्रिया का हिस्सा था, जो उसे माफिया नियंत्रण के तहत एक न्यायाधीश की तरह बनाता है।

तो यहाँ लूत है। वह निर्णय लेने और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के नकारात्मक पक्ष के लिए एक आदर्श है। सकारात्मक पक्ष पर, हम पुराने नियम में अन्य पात्रों को पाते हैं जो मुसीबत के बीच चमकते हैं।

उदाहरण के लिए, डेबोरा को उतना श्रेय नहीं मिलता जितना उसे मिलना चाहिए। हन्ना। पुराने नियम में ऐसे व्यक्तियों के बारे में बताया गया है जो उस समय और स्थान में परमेश्वर को प्रसन्न करते हैं और उसकी इच्छा पूरी करते हैं।

यीशु ने अच्छे सामरी का इस्तेमाल इस सवाल के जवाब के रूप में किया कि मेरा पड़ोसी कौन है? यह एक दिलचस्प पाठ है क्योंकि यहूदी परिभाषा के अनुसार सामरी पड़ोसी नहीं थे। वे बहिष्कृत थे। और यीशु ने यहूदी वकील से पूछा, मेरा पड़ोसी कौन साबित हुआ? उस अंश में, उन्होंने विषय और वस्तु बदल दी।

और वकील सामरी भी नहीं कह सकता था। उसने कहा कि वह वही था जिसने दया दिखाई। क्योंकि सामरी कहना उसके अपने मूल्यों, सामरियों के प्रति नकारात्मक मूल्यों के साथ टकराव होगा।

इसलिए, पवित्रशास्त्र की कहानियों में सभी प्रकार के प्रतिमान हैं जो हमें इस बारे में अंतर्दृष्टि देते हैं कि हमें अपने जीवन को कैसे व्यवस्थित करना चाहिए और हमारे पास क्या नैतिकता होनी चाहिए, और उन नैतिकताओं को ईश्वर की इच्छा के बारे में अन्य प्रश्नों में लाने का क्या मतलब है - प्रतीकात्मक दुनिया। मैं इसे थोड़ा स्पष्ट करने के लिए आपको हेस के लेखन पर एक नज़र डालने दूँगा।

लेकिन ऐसी चीजें जो अवधारणात्मक श्रेणियां बनाती हैं जिनके माध्यम से हम वास्तविकता की व्याख्या करते हैं। ये मानवीय स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं और ईश्वर के चरित्र को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, मानव जीवन के प्रति सम्मान उन श्रेणियों में से एक है।

उदाहरण के लिए, गर्भपात के मामले में हमारे पास ऐसा कोई संदर्भ नहीं है जो कहे कि, आप कभी गर्भपात न करवाएं। लेकिन हमारे पास ऐसा संदर्भ है जो मानव जीवन के मूल्य और मानव जीवन के प्रति सम्मान के बारे में बात करता है। और इसलिए निहितार्थों के अनुसार, हम उस मुद्दे पर उसी दृष्टिकोण से वापस आते हैं।

इसलिए उन्होंने हमें जो तरीके बताए हैं, वे हमें रचनात्मक सोच के लिए बहुत सारे क्षेत्र देते हैं कि हम अपने सामने आने वाले निर्णयों में नैतिकता और व्यवहार को स्वयं शास्त्रों से कैसे प्राप्त करें, भले ही वे हमेशा उन सवालों को सीधे संबोधित न करें। तो यह शास्त्र का मुद्दा है। मैं आपको पेज चार का बाकी हिस्सा पढ़ने दूँगा।

इसके अलावा, तर्क एक और श्रेणी है। हमारे चतुर्भुज में तर्क मूल रूप से धर्मशास्त्र के तर्क से संबंधित है, पाठ के बाइबिल अर्थ पर तर्क करना। यहीं पर इसका ध्यान केंद्रित है।

तर्क उससे कहीं ज्यादा बड़ा है, लेकिन हम बाइबल के पाठ में तर्क लाते हैं। बाइबल का पाठ, तर्क में, निगमनात्मक और आगमनात्मक तर्क के बारे में बात करता है। निगमनात्मक तर्क निश्चितता की ओर ले जाता है, और यह एक दावा है।

हमारे पास एक निगमनात्मक बाइबल है जो ईश्वर ने हमें दी है, जो ऐसे दावे करती है जिन पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता। लेकिन कई बार, हम बाइबल का आगमनात्मक अध्ययन करके ऐसी प्रणालियाँ बनाने की कोशिश करते हैं जो हमारे जीवन में आने वाले मुद्दों को संबोधित करती हैं। वे आगमनात्मक प्रक्रियाएँ भी तर्क की श्रेणी का ही हिस्सा हैं।

फिर हमारे पास परंपरा है। परंपरा हमारे चर्च की परंपराओं से बहुत जुड़ी हुई है, और वे बहुत मजबूत हो सकती हैं। लगभग हर चर्च, यह पृष्ठ पाँच शीर्ष पर है, हर चर्च का अपना संविधान होता है।

और उस संविधान में, आपको कुछ मुद्दों के बारे में चर्च की परंपराएँ मिलेंगी। जब मैं कई साल पहले पादरी था, तो डीकन मेरे पास अपने चर्च के संविधान के साथ आए, और उन्होंने कहा कि वे चाहते हैं कि मैं तलाक और पुनर्विवाह पर अनुभाग को फिर से लिखूँ। वह अनुभाग, मुझे नहीं पता, 20 या 30 साल पहले लिखा गया था।

चर्च ने कुछ श्रेणियों के बारे में अपनी सोच बदली है, जिसमें बिल्कुल नहीं और बिल्कुल नहीं पुनर्विवाह शामिल है, और वे चाहते हैं कि मैं इसे फिर से लिखूँ। मैंने उनसे कहा कि मैं इसे फिर से लिखने में उनकी मदद करूँगा क्योंकि यह उनकी जिम्मेदारी है और वास्तव में उनकी जरूरत है कि वे तलाक और पुनर्विवाह के मुद्दों पर सोचें क्योंकि यह एक बड़ा पारंपरिक बदलाव था। अमेरिकी संस्कृति में यह सच है।

20 और 30 के दशक में चर्च में तलाक बहुत कम था, और दुर्भाग्य से अच्छे लोगों को भी जब तकलीफ होती थी, तब भी कई तरह से इसे नापसंद किया जाता था। लेकिन आज, तलाक शायद ही कोई मुद्दा है, यहाँ तक कि हमारी ईसाई संस्कृति में भी। जॉन पाइपर के चर्च में बहुत ही रोचक लेख हैं, जहाँ जॉन पाइपर इस बारे में बहुत सख्त दृष्टिकोण रखते हैं।

उनके पूरे स्टाफ़ ने इस बारे में ज्यादा उदार ईसाई दृष्टिकोण अपनाया। और इसलिए, यहाँ हमारे पास एक प्रमुख व्यक्ति, पादरी है, जो एक प्रमुख मुद्दे पर अपने स्टाफ़ से भी असहमत है। इसलिए, परंपरा कुछ ऐसी चीज़ हो सकती है जो हमारा मार्गदर्शन करती है।

यह हमें कभी-कभी फंसा सकता है। लेकिन एक स्वस्थ चर्च समय-समय पर अपनी परंपराओं पर नज़र डालने और यह कहने में सक्षम होता है कि क्या यह वास्तव में बाइबिल है, या क्या हमने बाइबिल की अपनी समझ में एक निश्चित समय और स्थान को प्रतिबिंबित किया है? मैं वहाँ बहुत सारे उदाहरणों में नहीं जाना चाहता, और मैं बाद में कुछ के बारे में बात करूँगा, लेकिन तलाक और पुनर्विवाह इस विशेष श्रेणी में एक बड़ा डोमेन बन जाते हैं। यहाँ फिर से अनुभव करें।

यह पूरे चर्च का अनुभव है, और हम कभी-कभी अपनी गलतियों से सीखते हैं। यह अनुभव का एक हिस्सा है, और यह चतुर्भुज का एक हिस्सा बन जाता है। वेस्ले ने इसमें बहुत अधिक अर्थ डाला है, जितना मैं यहाँ बताने जा रहा हूँ।

ठीक है, तो शास्त्र, तर्क, परंपरा और अनुभव। बड़े चर्च ने परमेश्वर की इच्छा को समझने और उसे कार्यान्वित करने के लिए इन श्रेणियों का उपयोग किया है। ऐसे सभी प्रकार के प्रकाशन हैं जो इस बात से संबंधित हैं कि यह कैसे होता है।

खैर, यह सब कुछ नहीं है - यह मुद्दा कि शास्त्र हमें किस तरह मार्गदर्शन देता है। हमने अभी-अभी हेडीस के बारे में बात की है।

हम इसे दोहराने नहीं जा रहे हैं, लेकिन मैं आपसे एक मॉडल के बारे में बात करना चाहता हूँ जिसे मैंने लेवल मॉडल कहा है। बाइबल हमें तीन स्तरों पर सिखाती है कि हम बाइबल के सामने जो प्रश्न लाते हैं, उनके संबंध में शास्त्रों का उपयोग कैसे करें। इसलिए, यदि आप पृष्ठ पाँच के नीचे देखें, तो जब हम बाइबल को ज्ञान के स्रोत के रूप में उपयोग करते हैं और यह दावा करते हैं कि यह क्या सिखाती है, तो हम ज्ञान के अनुशासन, ज्ञानमीमांसा का उपयोग करते हैं।

हम जो जानने का दावा करते हैं, उसे हम कैसे जानते हैं, और हमारा दृष्टिकोण दूसरे की तुलना में अधिक वैध क्यों है? चर्च और व्यक्तियों ने इस क्षेत्र में बहुत बहस की है, दोनों ने शास्त्र के अधिकार का दावा किया है। यह तथ्य कि हमारे पास एक प्रेरित पाठ है और कई अप्रेरित व्याख्याकार हैं, एक समस्या प्रस्तुत करता है। यह एक समस्या है ; मुझे लगता है कि हम बिना किसी हिचकिचाहट के कह सकते हैं कि यह ईश्वर के आदेश का हिस्सा है।

यह ऐसा ही है। परमेश्वर जीवन को अलग तरह से जीने की योजना बना सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसने हमें यह तनाव दिया है कि चर्च और उसके सभी भागों को काम करना होगा।

हमारे पास एक प्रेरित पाठ है, लेकिन हम ईश्वरीय व्याख्याकारों के रूप में सहमत नहीं हैं, जो अकादमिक जांच के हर स्तर पर पाठ की जांच करने के लिए समान रूप से योग्य हैं, और फिर भी असहमत हैं। अब, यह विश्वदृष्टि का एक आकर्षक हिस्सा है, और यह एक वास्तविकता है जिसके साथ हम रहते हैं, और भगवान ने इसे समझाया नहीं है, लेकिन उन्होंने इसे हमें इस तथ्य से दिया है कि यह हमारी दुनिया में मौजूद है, और उन्होंने इसके खिलाफ बात नहीं की है। ठीक है, तो कुछ लोग दावा करते हैं, ध्यान दें, मुझे इसे पढ़ने दें ताकि मैं आपको यहाँ भ्रमित न करूँ, पृष्ठ पाँच के नीचे, जबकि कुछ मूल मान्यताएँ हैं जिन्होंने धर्मों को बाइबल से जोड़ा है, कई क्षेत्रों में कभी भी पूरी तरह से एकीकृत धर्मशास्त्र नहीं रहा है।

क्यों? अगर हमारे पास एक बाइबल और एक ईश्वर है, तो इस तरह की एकता कभी क्यों नहीं रही? इसके अलावा, कुछ लोग दावा करते हैं कि पवित्र आत्मा तुरूप का पत्ता है और हमें बताता है कि शास्त्र का क्या अर्थ है। मैं यह दावा करने जा रहा हूँ कि यह दावा अजीब और अहंकारी है। सबसे पहले, हम अपने व्याख्यान में पवित्र आत्मा के बारे में बहुत कुछ बात करेंगे, पवित्र आत्मा के शास्त्रों और व्याख्या के साथ संबंध के बारे में, लेकिन कुछ लोग आत्मा को तुरूप के पत्ते की तरह इस्तेमाल करते हैं और कहते हैं कि हम सही हैं क्योंकि आत्मा ने मुझे यह बताया है।

भगवान ने मुझे प्रकाशित किया, और यही उन्होंने मुझे बताया, और यही तरीका है, और मैं किसी अन्य बातचीत के लिए तैयार नहीं हूँ। खैर, मुझे खेद है, लेकिन यह आत्मा के मंत्रालय की सीमाओं

का अतिक्रमण है, और मुझे इसे बाद में समझाना होगा, भले ही आप अभी पीछे हटने जा रहे हों और कहें, वाह, मैंने अपने पूरे जीवन में यही समझा है कि आत्मा मुझे बताती है कि बाइबल का क्या अर्थ है, और आत्मा मुझे सही और गलत के बारे में समझाती है, विशेष रूप से क्या सच है। खैर, विश्वासों की पुष्टि शास्त्र के माध्यम से की जानी चाहिए।

बाइबल क्या सिखाती है, इसकी समझ के ज़रिए दृढ़ विश्वास का निर्णय किया जाना चाहिए। ये दावे व्यक्तिपरक दावे हैं, और हम बाद में उनकी जांच करने जा रहे हैं। अब, आगे बढ़ते हुए, पेज पांच से नौ पर, मैं इन तीन स्तरों पर जा रहा हूँ कि बाइबल हमें कैसे सिखाती है।

सबसे पहले, पेज छह पर, मेरे पास एक चार्ट है, और मैं इस बारे में थोड़ी बात करना चाहता हूँ कि बाइबल कहाँ स्थित है और धर्मशास्त्र में ईसाई परंपरा और बाइबल का अध्ययन किस तरह से होता है। पेज छह के नीचे एक चार्ट है जिसे थियोलॉजिकल इनसाइक्लोपीडिया कहा जाता है। यह स्लाइड नंबर चार है, और वह स्लाइड, जिसे आप चार्ट पर देख सकते हैं, लेकिन आपने इसे अपने नोट्स में रखा है। आप देखेंगे कि यह एक तरह का पिरामिड है क्योंकि मैं इन चीजों को डिज़ाइन करने के तरीके के बारे में वास्तव में रचनात्मक नहीं हूँ।

मेरा मुद्रित चार्ट उल्टा है, लेकिन हमें पता चला कि नीचे का हिस्सा हमेशा किसी भी तरह के चार्ट का आधार होता है। नीचे का हिस्सा आधार है, और हमारे पास व्याख्या है। हम उससे भी आगे जा सकते हैं और कह सकते हैं कि धर्मग्रंथ के पाठ की स्थापना, लेकिन हम यहाँ व्याख्या से शुरू करते हैं, बाइबिल के पाठों के बारे में तर्कपूर्ण निर्णय लेने की योग्यता।

फिर, हम बाइबिल धर्मशास्त्र की ओर बढ़ते हैं, जो एक संरचनात्मक और वैचारिक मॉडल प्रदान करता है जिसमें व्याख्या संचालित होती है। हमने बाइबिल के समग्र दृष्टिकोण के बारे में बात की, जैसा कि यह है, इसकी श्रेणियों को ध्यान में रखते हुए और उन्हें लागू नहीं करते हुए। ऐतिहासिक धर्मशास्त्र बाइबिल पर चर्च के चिंतन का रिकॉर्ड है।

हमने अभी इस बारे में थोड़ी बात की है। व्यवस्थित धर्मशास्त्र उससे कहीं बड़ी श्रेणी में आता है, जितना कि आमतौर पर माना जाता है। व्यवस्थित धर्मशास्त्र हठधर्मी धर्मशास्त्र के समान नहीं है।

हठधर्मी धर्मशास्त्र कुछ विचारों पर जोर देता है और उन पर तर्क करने के लिए बाइबल से प्रमाण ग्रंथों का उपयोग करता है। व्यवस्थित धर्मशास्त्र तकनीकी रूप से एक चर्च या परंपरा है जो अपने व्युत्पन्न वैचारिक मॉडल के आधार पर अपनी स्वयं की शिक्षा को चिंतनशील फोकस में लाता है। अब, यह इस तथ्य के लिए एक बहुत ही आकर्षक कथन है कि व्यवस्थित धर्मशास्त्र पिरामिड के शीर्ष पर है।

यह एक रचनात्मक रचना है, और हम आपको बस कुछ ही देर में इसका चार्ट देने जा रहे हैं। आप वापस आकर इसके बारे में सोच सकते हैं। यह दार्शनिक धर्मशास्त्र है।

व्यवस्थित और दार्शनिक धर्मशास्त्र बाइबल के बहुत से निहितार्थों से निपटते हैं जो सीधे तौर पर नहीं बताए गए हैं और वे हमें जो सिखा रहे हैं उसके बारे में तर्क देते हैं। यह प्राथमिक श्रेणी है जहाँ आप उन चीज़ों से निपटने जा रहे हैं जो शास्त्र में पाठ द्वारा संबोधित नहीं हैं, लेकिन निहित हैं

या बाइबिल कथा समझ की हमारी बड़ी श्रेणियों का हिस्सा हैं। क्षमाप्रार्थी धर्मशास्त्र वह है जहाँ हम अपने वैचारिक ढाँचे का बचाव करते हैं, और यह सब मंत्रालय धर्मशास्त्र में फ़ीड करता है।

मंत्रालय के संदर्भ में धर्मशास्त्र करना। आप जानते हैं, यह हमारी वर्तमान संस्कृति में दिलचस्प है। मैं यह कहना चाहूँगा कि चर्च, संभवतः कई कोनों में, पहले से कम शिक्षित मंत्रालय है।

कई चर्च अपने उम्मीदवारों से इस बारे में बात भी नहीं करते कि उनकी शिक्षा क्या है, स्कूल में उनका प्रदर्शन कैसा रहा और उन्होंने क्या पढ़ा। मास्टर ऑफ़ डिविनिटी, जो भाषाओं, धर्मशास्त्र और बाइबिल व्याख्या में एक क्लासिक तीन वर्षीय कार्यक्रम था, पहले आदर्श हुआ करता था। वास्तव में, यदि आपके पास तीन वर्षीय मास्टर ऑफ़ डिविनिटी नहीं है, तो आप सेना में पादरी नहीं बन सकते।

लेकिन संस्कृति ने इन सभी बातों को कमतर कर दिया है, और यह लगभग उस स्थिति तक पहुँच गया है कि कभी-कभी चर्च किसी ऐसे व्यक्ति के आधार पर पादरी चुनते हैं जिसे वे पसंद करते हैं या जिसकी बात सुनना पसंद करते हैं और उस व्यक्ति के मानसिक ढाँचे और प्रशिक्षण और बाइबल का उपयोग करने, बाइबल को समझने, बाइबल सिखाने में सक्षम होने के उनके कौशल की पर्याप्त जांच नहीं करते हैं। लेकिन इसे विश्वकोश कहा जाता है, और यह एक तरह की इकाई है, भले ही इसमें अलग-अलग टुकड़े हों। मैं इसे पानी के फव्वारे के रूप में सोचता हूँ।

आपके पास नीचे एक पूल है, और पानी ऊपर आता है और वापस नीचे टपकता है। यह सब किसी न किसी तरह से एकीकृत है। वे सभी एक दूसरे से संबंधित हैं।

वे एक दूसरे पर निर्भर करते हैं, भले ही इस विश्वकोश के भीतर अलग-अलग विषय हों। अब, उससे आगे बढ़ते हुए, मैं आपके नोट्स के पेज सात पर बाइबिल की शिक्षा के तीन स्तरों के इस मुद्दे पर बात करना चाहता हूँ। ठीक है, बाइबिल कैसे सिखाती है इसके तीन स्तर हैं।

मैंने इसका उल्लेख किया है, लेकिन अब मैं इसे थोड़ा और विस्तार से बताना चाहता हूँ। इन तीन स्तरों पर, मैं जोर दे रहा हूँ, और यह सिर्फ मैं ही नहीं हूँ। मुझे यह मॉडल, मॉडल का विचार, ऑस्ट्रेलिया में पढ़ाने वाले एक व्यक्ति से मिला, और एक ऑस्ट्रेलियाई धर्मशास्त्री उस व्यक्ति के पास आया और उस मॉडल से कहा कि आप जो पढ़ा रहे हैं, क्या वह सीधे बाइबल द्वारा सिखाया गया है? क्या यह बाइबल द्वारा निहित है, या यह आपकी अपनी रचना है? और एक बातचीत में, एक ठीली बातचीत में, यह बात मेरे दिमाग में आई, और मैंने वर्षों तक इसका अनुसरण किया, और मैंने इसके संबंध में अपना खुद का मॉडल विकसित किया है कि बाइबल हमें इन तीन स्तरों पर सिखाती है।

यह प्रत्यक्ष शिक्षा देता है। यह एक मार्ग का शिक्षण अभिप्राय है जिसे हम एक ठोस व्याख्यात्मक विधि द्वारा प्रदर्शित कर सकते हैं। और कुल मिलाकर, अधिकांश प्रत्यक्ष मार्ग अधिकांश संप्रदायों के साथ सर्वत्र सहमति रखते हैं।

उनमें से सभी नहीं क्योंकि कभी-कभी आपको कैल्विनवाद और आर्मिनियनवाद के बीच एक बड़ी बाधा मिलती है। लेकिन यह प्रत्यक्ष शिक्षण है। पाठ का शिक्षण उद्देश्य।

फिर, आप निहित स्तर और रचनात्मक निर्माण स्तर पर जाते हैं। जब आप नीचे से शिक्षण इरादे से ऊपर जाते हैं, तो आपके पास धार्मिक विश्लेषण होता है। धार्मिक विश्लेषण को हम वर्गीकरण कहते हैं।

मुझे नहीं लगता कि मेरे पास इस विशेष चार्ट में ऐसा है। मुझे अन्य नोट्स से इन्हें बनाने या कॉपी करने में कुछ परेशानी हुई। लेकिन मेरे इस पूरे शिक्षण में, इसे हम निम्न वर्गीकरण कहते हैं।

दूसरे शब्दों में, यह बहुत स्पष्ट है कि यह प्रत्यक्ष है। लेकिन जब आप पिरामिड में ऊपर की ओर बढ़ते हैं, तो आपको एक दावे को साबित करने के लिए तर्क की बहुत सारी पंक्तियों को एक साथ लाना पड़ता है। इसे इस तरह से कहें तो यह आलोचनात्मक सोच का एक उच्च स्तर है।

इसे उच्च वर्गीकरण या निम्न वर्गीकरण के रूप में जाना जाता है। उदाहरण के लिए, यदि आप कोई परीक्षा देते हैं, तो भले ही बहुविकल्पीय प्रश्न, जब वे विशेषज्ञों द्वारा सही ढंग से लिखे गए हों, सभी प्रश्नों में सबसे चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं और परीक्षा के बारे में उन तरीकों से बता सकते हैं जिनके बारे में आपको पता भी नहीं होता। इस तरह की एक अच्छी परीक्षा में, आप बाहर निकलते हैं, आप कहते हैं, ठीक है, मैंने इसका उत्तर दिया, लेकिन मुझे नहीं पता कि मैंने कैसे किया।

यह वास्तव में एक बहुत अच्छी परीक्षा है। और अक्सर, यह उसी श्रेणी में आता है। लेकिन कई जगहों पर, लोग बहुविकल्पीय, बहुअनुमानों के बारे में बात करते हैं।

खैर, इसका मतलब है कि वे अच्छी तरह से डिज़ाइन नहीं किए गए थे। और इसलिए हम बहुविकल्पीय परीक्षण को एक तरह से निम्न श्रेणी के रूप में सोचते हैं, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं है, लेकिन हम इसका उपयोग उसी तरह करते हैं। हम निबंध परीक्षा को एक उच्च श्रेणी के रूप में सोचते हैं, जहाँ आपको चीजों को समझने योग्य कथन में लिखने और उसका बचाव करने में सक्षम होना चाहिए।

अच्छी परीक्षाएँ आपको ऐसा करने के लिए प्रेरित करती हैं। उन्हें पूरा करना आसान होता है और ग्रेड देना कठिन। मैं यह बात अपने अनुभव से जानता हूँ।

DIRECT के निचले भाग में, वह शिक्षण अभिप्राय, जिसे हम प्रदर्शित कर सकते हैं, पाठ बताता है, फिर निहितार्थ। निहितार्थ, और मैं आपको यह पूरा हैंडआउट नहीं पढ़ने जा रहा हूँ। मैं इसे अगले पृष्ठों पर अधिक विस्तार से बताता हूँ।

यहाँ तक कि त्रिदेव, ईश्वर की त्रिदेव की शिक्षा भी निहित क्षेत्र में है। हमारे पास त्रिदेव के बारे में कोई सरल प्रमाण पाठ नहीं है। लेकिन हमारे पास पाठ के बहुत सारे निहितार्थ हैं।

बपतिस्मा, यीशु वहाँ है, आत्मा वहाँ है, और परमेश्वर पिता स्वर्ग से बोलता है। बपतिस्मा का सूत्र, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा का नाम। त्रिएकत्व के सभी प्रकार के बाइबिल निहितार्थ हैं, लेकिन एक सिद्धांत के रूप में त्रिएकत्व को कुछ समय के लिए विकसित नहीं किया गया था।

चर्च ने इसे देखा, समझा, इसकी पुष्टि की, लेकिन चर्च के रूप में चर्च, सामूहिक रूप से चर्च, उत्पीड़न के बाद एक साथ आने और यीशु के बारे में जो कुछ वे समझते थे, उसे बताने में वास्तव में बहुत लंबा समय लगा, त्रिदेवों के बारे में जो कुछ वे समझते थे, उसे बताने में सक्षम हुआ। प्रमुख सम्मेलनों, निकिया की परिषद, चाल्सेडन की परिषद, और कई अन्य ने इन बातों पर चर्चा की। शैफ़ द्वारा लिखित शैफ़ चर्च इतिहास खंड, वे अब काफी पुराने हैं, लेकिन वे अभी भी बहुत अच्छे हैं क्योंकि वे आपको उन सभी शुरुआती शताब्दियों, विशेष रूप से चर्च की पहली पाँच शताब्दियों के बारे में बताते हैं, और कैसे चर्च ने उन चीज़ों को परिभाषित करना जारी रखा जो वे पहले से ही मानते थे लेकिन कॉन्स्टेंटाइन के बाद 300 के दशक की शुरुआत तक उत्पीड़न के कारण सक्षम नहीं थे।

वे एक चर्च के रूप में एक साथ आने और इन चीज़ों को हथियारबंद करने में सक्षम थे, और इस संबंध में चर्च के इतिहास को पढ़ना दिलचस्प है। तो एक व्यक्ति के रूप में मेरे बारे में क्या? और मैं इस बारे में पृष्ठ 989 पर थोड़ा और बात करता हूँ, लेकिन मैं इसे आपको पढ़कर नहीं सुनाने जा रहा हूँ। जब भी आप बाइबल की किसी आयत से निपट रहे हों जिसका उपयोग आप कुछ साबित करने के लिए करने जा रहे हैं, और उम्मीद है कि आप ऐसा नहीं करेंगे। उम्मीद है, आपके पास एक संदर्भ है, और आपके पास कुछ ऐसा है जो उस संदर्भ के लिए वैध है, आपको खुद से सवाल पूछना होगा, जब आप बाइबल का उपयोग यह कहने के लिए कर रहे हैं कि यह ईश्वर की इच्छा है, तो आपको इस सवाल का जवाब देना होगा, क्या मैं जिस बाइबल मार्ग का उपयोग कर रहा हूँ वह मेरे द्वारा कही जा रही बातों के बारे में प्रत्यक्ष शिक्षा दे रहा है, या मैं जो कह रहा हूँ उसके बारे में निहितार्थ प्राप्त कर रहा हूँ, या मैं पवित्रशास्त्र के शब्दों को ले रहा हूँ और जो मैं कह रहा हूँ उसके बारे में एक रचनात्मक निर्माण नामक एक बड़ी श्रेणी बना रहा हूँ? निहितार्थ के स्तर पर बहुत सी चीज़ें महत्वपूर्ण हैं।

हमने त्रिदेव के बारे में बात की। त्रिदेव एक निहितार्थपूर्ण शिक्षा है। मेरे पास एलिस्टेयर मैकग्राथ का एक उद्धरण है जिसे आप बाद में नोट्स में पढ़ सकते हैं।

हालाँकि, रचनात्मक निर्माण, उदाहरण के लिए, एस्कैटोलॉजी और सहस्राब्दिवाद की यह पूरी श्रेणी, और इससे भी बदतर, रैप्चर मुद्दे, कितने हैं, विचार हैं। और हमारे पास ऐसी किताबें हैं जो इन चीज़ों को देखती हैं। वे सभी रचनात्मक निर्माण हैं।

वे बाइबल की गवाही से इन श्रेणियों के युगांतशास्त्र को समझने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन आपको ऐसे बहुत से लोग मिलेंगे जो एक ही पाठ को लेकर अलग-अलग अर्थ निकालते हैं। यह ऊपरी वर्गीकरण में आता है, ऊपरी आलोचनात्मक सोच श्रेणी में, जो पूरी कहानी को एक साथ लाने की कोशिश करता है।

यह पुराने नियम से लेकर नए नियम तक हर जगह काम करता है। भविष्य के बारे में ये सहस्राब्दी के विचार अतीत से लेकर पुराने नियम तक और उसके बाद नए नियम तक कुछ सोच द्वारा पूर्वानुमानित बातों पर निर्भर हैं। जिसे हम रचनात्मक निर्माण कहते हैं, उस पर बड़ी-बड़ी किताबें लिखी गईं। लेकिन आपके पास कोई सरल प्रमाण पाठ नहीं है।

बाइबल में रैचर के बारे में कोई प्रमाण पाठ नहीं है। अब आपके पास कुछ ऐसे हैं जिनका आप हवाला देने जा रहे हैं। लेकिन अगर आप व्याख्यात्मक परंपराओं के माध्यम से इसे बड़े पैमाने पर देखें, तो आपको वह नहीं मिलेगा जो आप दावा कर रहे हैं।

आप जो दावा कर रहे हैं, वह आपको एस्केटोलॉजी के बारे में रचनात्मक निर्माण में मिलता है। अब, मुझे पता है कि मैंने वहां बहुत कुछ कहा है, और उस विचार को समझने के लिए कई पाठों की आवश्यकता होगी। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप इस समय इस विचार को समझें।

जब आप बाइबल के पाठों से निपट रहे हों और उन पाठों को उस पर लागू कर रहे हों जिसे आप नैतिकता में जिम्मेदारी या निर्णय लेने में जिम्मेदारी कह रहे हैं, तो आपको खुद से यह सवाल पूछना होगा कि क्या मैं बाइबल की प्रत्यक्ष शिक्षा का उपयोग कर रहा हूँ? या मैं बाइबल के निहितार्थ क्षेत्र में हूँ? या क्या मैं बाइबल से आने वाली रचनात्मक संरचनाओं में साबित करने के लिए और भी अधिक कठिन चीज़ में फिसल गया हूँ? रचनात्मक संरचनाओं में कुछ भी गलत नहीं है। हम सभी उनके अनुसार जीते हैं। लेकिन हमारे पास तर्क की रेखाएँ होनी चाहिए।

तर्क की रेखाएँ। रचनात्मक रचनाएँ यहाँ अपने आप में नहीं हैं, लेकिन वे प्रत्यक्ष शिक्षण का दावा करती हैं। वे निहित शिक्षण का दावा करती हैं।

फिर भी, इन दावों में निर्माण अलग-अलग होंगे। आपने कभी-कभी चर्च के निचले स्तरों में भी इसका अनुभव किया होगा। लेकिन हमें इस प्रतिमान के प्रति जागरूक होना होगा।

क्या बाइबल हमें यह बात सीधे तौर पर सिखाती है, निहित रूप से, या यह एक रचनात्मक रचना है? और यहाँ रचनात्मक रचनाएँ कैसे जुड़ती हैं? कई बार, उन कनेक्शनों को करने के लिए बाइबल के पाठ पर एक निश्चित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। मैं शायद इसका एक दिलचस्प उदाहरण देना चाहूँगा। 1. हॉवर्ड मार्शल इंग्लैंड में एक प्रमुख बाइबिल विद्वान थे।

वह एफएफ ब्रूस के शिष्य के बाद एक प्रमुख विश्वविद्यालय के अध्यक्ष बने। वह ब्रूस के बाद आने वाले व्यक्ति बन गए। और उस विशेष अवधि में ब्रूस एक महान बाइबिल विद्वान थे।

कई डॉक्टर छात्रों को प्रशिक्षित किया। मार्शल ने जो शोध प्रबंध लिखा था, उसका नाम था केए बाय द पावर। और यह एक ऐसी किताब बन गई जिसे आप शायद पुरानी किताबों में पा सकते हैं, शायद इसके लिए ज़्यादा पैसे भी नहीं खर्च करने पड़ें।

शक्ति द्वारा रखा गया। अब, मैं। हॉवर्ड मार्शल वेस्ली है। वह पूर्ण दृढ़ता के कैल्विनवादी सिद्धांत के विपरीत, सशर्त दृढ़ता के रूप में जाना जाने वाले तर्क के लिए भी तर्क दे रहा था।

अगर कोई व्यक्ति वास्तव में बचा हुआ है, तो वह अंत तक दृढ़ रहता है। और वहाँ बात करने के लिए बहुत सी बातें हैं। लेकिन वह सशर्त दृढ़ता के लिए तर्क दे रहा था।

उन्होंने उस परंपरा में इस्तेमाल किए गए सभी अंशों को देखा। उदाहरण के लिए, इब्रानियों की चेतावनी वाले अंश। और अन्य पाठ जो उन्होंने इसके लिए इस्तेमाल किए।

लेकिन जब उन्होंने, एक बहुत ही अच्छे बाइबिल विद्वान के रूप में, उन ग्रंथों के माध्यम से काम किया, तो वे हमेशा उस बिंदु पर नहीं पहुंचे जहां वे कह सकें कि यह सशर्त दृढ़ता को साबित करता है। वास्तव में, उनके शीर्षक, केए बाय द पावर में, जब आप पुस्तक को पढ़ते हैं और अंत तक पहुंचते हैं, तो आपको एहसास होता है कि वे मूल रूप से कहते हैं कि हमने अपने दृष्टिकोण के लिए बाइबिल के साक्ष्य को देखा है। लेकिन दिन के अंत में, मेरा सबसे बड़ा दावा यह है कि हम इस तथ्य पर भरोसा कर सकते हैं कि हम ईश्वर की शक्ति द्वारा सुरक्षित हैं।

और मुझे यह बात बहुत दिलचस्प लगी जब मैं आखिरकार उनके तर्क में उस बिंदु पर पहुंचा। उन्होंने उन ग्रंथों पर दावा किया, और फिर भी, दिन के अंत में, वे इस बिंदु पर वापस आए कि हम ईश्वर की शक्ति द्वारा रखे गए हैं। इसलिए, मुझे लगता है कि उनके रचनात्मक निर्माण में, उनके अपने दिमाग में, एक व्याख्याकार के रूप में, पाठ से निपटने में कुछ तनाव था।

और दिन के अंत में, उन्होंने परंपरा के संप्रदाय को बनाए रखा। लेकिन साथ ही, उन्होंने कहा, दिन के अंत में, हम ईश्वर की शक्ति द्वारा रखे गए हैं। और मैं वास्तव में इससे आगे कुछ नहीं कह सकता।

यह एक रचनात्मक निर्माण और एक प्रमुख विद्वान का एक बहुत ही दिलचस्प उदाहरण है जिसका हम सभी सम्मान करते हैं और उन्होंने इससे कैसे निपटा। इसलिए, मुझे पता है कि मैंने इस बारे में आप पर बहुत कुछ फेंका है। लेकिन मैं निश्चित रूप से चाहता हूँ कि आप उस रचनात्मक निर्माण के बारे में सोचें जिसमें बाइबल हमें तीन तरीके सिखाती है।

और मैं फिर से समय के मामले में पीछे रह गया हूँ। विचार करने के लिए अतिरिक्त विचार। प्रेरितों के काम की पुस्तक में निर्देशात्मक और वर्णनात्मक विश्लेषण।

अब, इस संबंध में, मैं इन अतिरिक्त विचारों पर विचार करने के लिए अपना समय यहाँ बहुत अधिक नहीं बढ़ा सकता। यह पेज छह से आठ पर भी है। वास्तव में, पेज नौ के नीचे।

यदि आप एक पल के लिए वहाँ देखें, तो पृष्ठ नौ के नीचे, मैंने इसे उठाया है, और मैंने वहाँ इस पर विस्तार से बात नहीं की है। लेकिन हर बार जब आप बाइबल का कोई पाठ पढ़ते हैं, तो आपको यह सवाल पूछना ही पड़ता है। क्या वह पाठ निर्देशात्मक है? निर्देशात्मक का अर्थ है कि उसने मुझे ऐसा करने का आदेश दिया है।

या यह वर्णनात्मक है? यह मुझे इसके बारे में बता रहा है। उदाहरण के लिए, जब आप प्रेरितों के काम की पुस्तक से निपटते हैं, तो क्या घर-घर जाने का मतलब यह है कि हमें अपने चर्च के घर-घर जाकर लोगों से मिलने का निर्देश दिया गया है? मैं ऐसे चर्चों में गया हूँ जो इसे प्रमाण पाठ के रूप में दावा करते हैं, कि हमें घर-घर जाकर लोगों तक पहुँचना है। अन्यथा, हम बाइबल का पालन नहीं कर रहे हैं।

या फिर प्रेरितों के काम में सिर्फ यह बताया गया है कि उन्होंने क्या किया? आप बाइबल के पाठों के साथ जो भी कर रहे हैं, आपको ये दो पहलू मिलेंगे। क्या वे व्यवहार निर्धारित कर रहे हैं? क्या

वे व्यवहार का वर्णन कर रहे हैं? कई बार, बाइबल व्यवहार निर्धारित नहीं करती। पुराने नियम के खाद्य नियम उस समय और स्थान पर निर्देशात्मक थे।

लेकिन जब हम नए नियम में आते हैं, तो वे इस्राएल के इतिहास के एक हिस्से का वर्णनात्मक हो जाते हैं। लेकिन वे अब निर्देशात्मक नहीं हैं, लेकिन अब हम उन्हें वर्णनात्मक क्षेत्र में देख रहे हैं। अब, यह समझना आसान बात नहीं है कि निर्देशात्मक क्या है और वर्णनात्मक क्या है।

लेकिन निर्देशात्मक हमेशा, हमेशा मानक होता है। इसका कभी कोई अपवाद नहीं होता। जबकि वर्णनात्मक वह होता है जिसमें परमेश्वर हमें बताता है कि छुटकारे के इतिहास में क्या हुआ था।

उदाहरण के लिए, गॉर्डन फी ने अपनी पुस्तक में हेर्मेनेयुटिक्स पर यह बात कही है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक वर्णनात्मक है, निर्देशात्मक नहीं। बहुत से लोग प्रेरितों के काम की पुस्तक को इस बात का आदेश मानते हैं कि हमें कैसे काम करना चाहिए। लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक का उद्देश्य ऐसा नहीं था।

प्रेरितों के काम की पुस्तकों का उद्देश्य इतिहास और उस समय और स्थान पर क्या चल रहा था, इसका वर्णन करना था। हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में आते हैं, और हम इसके निहितार्थों के बारे में जान सकते हैं। हम प्रेरितों के काम की पुस्तक से कुछ व्यवहार पैटर्न के बारे में तर्क कर सकते हैं।

लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक कोई अनिवार्य निर्देश नहीं है। प्रेरितों के काम की पुस्तक उस समय और स्थान पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने वाली कलीसिया का वर्णन है। और हमें भी परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना है।

संभवतः वे सिद्धांत जिन्हें वे पूरा कर रहे थे, जैसे कि सुसमाचार प्रचार और मिशन, जैसा कि हम उन्हें कहते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि हमें इसे उसी तरह से करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह हमें इसका वर्णन कर रहा है। अब, यह एक बहुत बड़ा हिस्सा है जो मैंने अभी आपको बताया है।

मुझे पता है, लेकिन आप बेहतर तरीके से लड़ने के बारे में उलझन में हैं, जैसा कि एक व्यक्ति ने एक बार कहा था। बाइबल में मानक शिक्षा क्या है? खैर, मानक शिक्षा वह है जिसे हम अभी जहाँ भी पाते हैं, वहाँ निर्देशात्मक साबित कर सकते हैं। इसलिए, हम बहुत सारे ग्रंथों का अध्ययन करेंगे जो वर्णनात्मक हैं, निर्देशात्मक नहीं।

लेकिन हमारे पास ऐसे पाठ होंगे जो निर्देशात्मक होंगे। और जब हम कुछ खास संदर्भों में उनके पास आएंगे तो हमें उससे निपटना होगा। शिक्षण अभिप्राय और धर्मशास्त्रीय विश्लेषण को यह परिभाषित करना होगा कि निर्देशात्मक क्या है।

उदाहरण के लिए, इफिसियों में पादरी के लिए योग्यताओं जैसी किसी चीज़ में भी, मैं अपनी समय सीमा पर हूँ। क्या वे योग्यताएँ निर्देशात्मक या वर्णनात्मक हैं? अगर वे निर्देशात्मक हैं, तो

इसका मतलब है कि अविवाहित व्यक्ति पादरी नहीं हो सकता। अगर वे निर्देशात्मक हैं, तो इसका मतलब है कि एक विवाहित व्यक्ति जिसके कोई बच्चे नहीं हैं, वह पादरी नहीं हो सकता।

क्या आपने कभी इस बारे में सोचा है? लेकिन अगर वे वर्णनात्मक हैं, तो इसका मतलब है कि अगर आपको पादरी बनने के लिए बुलाया गया है और चर्च वह है जो कहता है कि आपको बुलाया गया है, न कि आप, चर्च तय करता है कि आप हैं या नहीं, तीमुथियुस को ध्यान से पढ़ें, और आप विवाहित नहीं हैं, तो आपके विवाहित जीवन के बारे में आपके खिलाफ कोई आलोचना नहीं की जा सकती है। इसलिए, आप आलोचना के मामले में उस विशेष परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं। आमतौर पर इसका वर्णन इसी तरह किया जाता है।

अगर यह निर्देशात्मक है, तो बहुत से चर्चों को विवाह, विवाह और बच्चों के कारण पादरियों के बारे में अपनी सोच पर पुनर्विचार करना होगा। मैं वास्तव में स्पष्ट रूप से सोचता हूँ कि यह मानक होना चाहिए, लेकिन यह मानक नहीं है। मैं ऐसा इसलिए सोचता हूँ क्योंकि अगर आपके बच्चे नहीं हैं, तो आप नहीं जानते कि लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना है, स्पष्ट रूप से।

आप इसे सीख सकते हैं, लेकिन जब आपको बच्चों और उनकी वसीयतों से निपटना पड़ता है और उनके बच्चे अलग होते हैं, तो आप अपने परिवार में एक ऐसी स्थिति में होते हैं जो चर्च परिवार की स्थिति में आपके कौशल को हस्तांतरित करने जा रही है जहाँ आपके पास दृढ़ इच्छाशक्ति वाले चर्च के सदस्य हैं, और हो सकता है कि आपके पास चर्च के सदस्य हों जिन्हें वसीयत की आवश्यकता हो और आप परिवार में उससे निपटते हैं, आप चर्च में उससे निपटते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि उन चीजों में समझदारी है, लेकिन चर्चों को यह सवाल पूछना होगा कि क्या वे निर्देशात्मक या वर्णनात्मक हैं? और आप व्याख्यात्मक अध्ययनों में इसके कई उत्तर पा सकते हैं। बाइबिल से परे प्रस्ताव।

मैंने इस पर एक किताब लिखी है, मैं उसमें आपको इसका ज़िक्र करूँगा। अधिक टेक्स्ट है। ये कुछ ऐसी किताबें हैं जिनकी मैं अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ: कॉसग्रोव, हेज़ और हॉलिंगर, ताकि आपको नॉर्मेटिविटी के मुद्दों पर काम करने में मदद मिल सके, लेकिन मैं अब आपसे इस बारे में बात नहीं कर सकता।

मैं बस यह क्षेत्र आपके लिए छोड़ रहा हूँ, अगर आप चाहें तो, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो आजीवन सीखने वाला बना रहता है। ठीक है। समस्या संदर्भ के बजाय प्रमाण ग्रंथों के साथ है।

मुझे खेद है, लेकिन मैं समय से आगे जा रहा हूँ। मैं जो करना चाहता हूँ, उसमें मैं सीमा से बाहर हूँ, लेकिन यह सबसे अधिक सीमा से बाहर का व्याख्यान है। आप कभी भी आ सकते हैं और जा सकते हैं।

आपको इनमें से किसी भी पाठ में जितना समय चाहिए उतना समय बिताने की स्वतंत्रता है, और इसलिए, मैं इसे करने के लिए इसे थोड़ा लंबा कर रहा हूँ। संदर्भ के बजाय प्रमाण पाठ की समस्या। किसी ने कई बार कहा है कि प्रमाण पाठ एक बहाना है।

हमें संदर्भ की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, मुझे अच्छी तरह याद है कि कोई व्यक्ति प्रथम थिस्सलुनीकियों को कैसे लेता था, जिसमें कहा गया है कि बुराई के सभी रूपों से बचें। यह किंग जेम्स संस्करण में है।

बुराई के सभी रूपों से दूर रहें। और वे कहेंगे, आप सिनेमाघर नहीं जा सकते क्योंकि वहाँ बुराई का रूप है। आप ऐसे रेस्टोरेंट में नहीं जा सकते जहाँ शराब परोसी जाती है क्योंकि वहाँ बुराई का रूप है।

मुझे नहीं पता कि इस आयत के साथ कितनी बार लोगों को बरगलाया गया है। और फिर एक नया अनुवाद सामने आता है और कहता है, हर तरह की बुराई से बचें। वाह।

संस्करणों को देखने का महत्व समझ में आया? हर तरह की बुराई संगति के कारण अपराधबोध से बहुत अलग होती है, जो हमारे सामने मौजूद बुराई का आभास है। इसलिए संदर्भ के बजाय प्रमाण पाठ की समस्या है। अगर हमारे पास थिस्सलुनीकियों पर सही संदर्भ होता, तो हमें लोगों द्वारा बुराई के आभास के वाक्यांश के साथ छेड़छाड़ करने की समस्या नहीं होती।

लेकिन हम कहेंगे, देखिए, यह दिखावे की बात नहीं है। यह बुराई के प्रकार की बात है। और यह एक अलग चर्चा है।

हमें बाइबल को उसके अपने संदर्भ में और उसके अपने शब्दों में पढ़ना चाहिए। हम बाइबल के अंदर से नहीं पढ़ते। हम बाइबल से पढ़ते हैं।

अब, परमेश्वर की इच्छा जानने की दुविधा। बाइबल हमारे कई सवालों का सीधा जवाब नहीं देती। इसलिए हमें मॉडल की ज़रूरत है।

हमने बाइबल के अनुसार सोचने के लिए मॉडल के बारे में बहुत बात की है। परिवर्तित मन केंद्रीय मॉडल है। लेकिन मैं आज इस बारे में थोड़ी बात करना चाहता था कि चर्च ने उन मुद्दों को कैसे संसाधित किया है जिन पर हमने विशेष रूप से बात नहीं की है, जैसा कि हम कर सकते थे, या शायद करना चाहिए।

लेकिन हमारे यहाँ के दायरे में, हमारे पास वह अवसर नहीं है। लेकिन आप युद्ध के मुद्दों, गैर-लड़ाकों के मुद्दों, उदाहरण के लिए, लिंग के मुद्दों को देख सकते हैं, और देख सकते हैं कि कैसे चर्च, बड़े पैमाने पर, इन मामलों पर अपने विचारों का तर्क देता है। इसलिए हमें जीवन के उन मुद्दों के बारे में बाइबल के अनुसार सोचने के लिए मॉडल की आवश्यकता है जिनका हम सामना करते हैं।

चर्च किस तरह विकसित हुआ है, इसकी वास्तविकता पर विचार करते हुए, प्रेरितों का युग नए नियम का अभिलेख है। और यह एक गैर-परक्राम्य प्रकट अभिलेख है। और फिर भी, हम अभी भी कई अवसरों पर इसके अर्थ को समझने के संदर्भ में चर्च में इस पर बातचीत करते हैं।

लेकिन यह सब बहुत स्पष्ट है। प्रेरितों के बाद के युग में, परिषदें थीं। लेकिन बहुत विविधता थी।

कुछ लोग चर्च परिषदों में बहुमत और अल्पसंख्यक के बारे में बात करते हैं और कैसे कभी-कभी अल्पसंख्यक, उन्हें लगता है, आगे निकल गए। खैर, आपको इसे पढ़ना होगा। लेकिन चाल्सेडन, नाइसिया, चाल्सेडन की परिषदें, कॉन्स्टेंटिनोपल थीं।

यहाँ कई परिषदें और बहुत सारा साहित्य है जो यह दर्शाता है कि चर्च ने कुछ मुद्दों के संबंध में परमेश्वर के मन को जानने के प्रश्नों पर कैसे बातचीत की। संप्रभुता और नैतिक इच्छा की मान्यता की आवश्यकता है - बहुत बड़ी विविधता।

ईश्वर ने विविधता को उस रचनात्मक वास्तविकता में प्रोग्राम किया है जिसका हम अनुभव करते हैं। अगर हम विविधता के खिलाफ़ लात मारते हैं, तो हम ईश्वर के खिलाफ़ लात मार रहे हैं। ईश्वर हमसे अपेक्षा करता है कि हम इस पर बातचीत करें, इससे निपटें, और विविधता में भी उसका और उसके वचन का अनुसरण करें क्योंकि उसने हमें कई मुद्दों पर कोई प्रेरित टिप्पणी नहीं दी है।

निरंतर चुनौतियाँ। चर्च के इतिहास में विविधता का बोलबाला है। एक सर्वज्ञ ईश्वर ऐसा क्यों डिज़ाइन करेगा और इसकी अनुमति क्यों देगा? अगर आपने उस तनाव को महसूस नहीं किया है, तो आप सोच नहीं रहे हैं।

हमारे यहाँ बहुत से ईश्वरीय लोग हैं, जिनके विचार अलग-अलग हैं। यही विविधता है। और ईश्वर ने पहले से नहीं सोचा था।

मुझे यह नहीं कहना चाहिए कि मैंने पहले ही अनुमान लगा लिया है। मैं कह सकता हूँ कि मैंने पहले ही अनुमान लगा लिया है क्योंकि पहले से अनुमान लगाना एक विकल्प है। ईश्वर ने कोई चुनाव नहीं किया है।

भगवान ने हमें कोई अलग रास्ता नहीं दिया है। उसने हमें विविधता के बीच एकता खोजने का रास्ता दिया है। अब, यह हमें चर्च के इस मुद्दे के अंत तक ले आता है और हम अपने स्वयं के परिवेश में बड़े चर्च के संदर्भ में इस पर कैसे विचार करते हैं।

स्लाइड्स पर व्याख्यान GM3. अब, मुझे पता है कि मैंने आपके सामने बहुत सी चीज़ें रखी हैं, और मैं उन्हें ठीक से नहीं समझा पाया हूँ। लेकिन मेरे पास इस तरह की श्रृंखलाओं के लिए बहुत कम समय है, और मैं पहले से ही इसे बढ़ा रहा हूँ और अपने व्याख्यानों के संबंध में डॉ. हिल्डेब्रांट के धैर्य को बनाए रखने की कोशिश कर रहा हूँ।

लेकिन मुझे लगा कि यह एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। यह थोड़ा अलग है, लेकिन यह आपके लिए यह महसूस करना एक महत्वपूर्ण बात है कि ईश्वर की इच्छा को जानना सिर्फ़ मैं, मैं और मैं नहीं है। वास्तविक स्तर पर ईश्वर की इच्छा को जानना चर्च है, संपूर्ण चर्च, चर्च अपनी विविधता के बीच एकता के रूप में। यह ईश्वर की इच्छा को जानने की एक श्रेणी है जो शायद अधिक महत्वपूर्ण है, लेकिन उतनी ही महत्वपूर्ण है, लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि मुझे क्या करना चाहिए।

हम ईश्वर की इच्छा जानने के प्रश्न की खोज में इतने आत्म-केंद्रित हो गए हैं कि हम इसे करने के नए-नए मॉडल लेकर आए हैं ताकि हमें अपना उत्तर मिल सके और हम इसके बारे में अच्छा महसूस कर सकें। लेकिन मैं आपको बता रहा हूँ, यह इतना आसान नहीं है। यह व्यावहारिक नहीं है।

यह आपके मन में आने वाले प्रश्नों, हमारे पूरे चर्च के प्रश्नों पर परिवर्तित मन को लागू करने की प्रक्रिया है, और ऐसे उत्तरों के साथ आना है जो चर्च और व्यक्तियों की अच्छी तरह से सेवा कर सकते हैं। आपके धैर्य के लिए वास्तव में धन्यवाद। जब हम अगले अनुभागों में जाएंगे, तो हम विशिष्ट बाइबिल संबंधी मुद्दों पर चर्चा करेंगे जिनके बारे में हमने अलग-अलग समय पर बात की है।

हम पुराने नियम को देखने जा रहे हैं। हम नए नियम को इस संदर्भ में देखने जा रहे हैं कि इसमें इस बारे में विशेष रूप से क्या कहा गया है। इसलिए हमने कुछ नींव तैयार कर ली हैं, और अब हम बाइबल पर वापस आएं।

मैं बाइबल से शुरू करता था, लेकिन बाइबल के बारे में बात करने के लिए मुझे बहुत सी बातें कहनी पड़ती थीं। अब, जब हम बाइबल के बारे में बात करते हैं, तो हमारे पास यह सब आधार होता है ताकि हम अपने पाठ और उन मुद्दों को जोड़ सकें जो हमें ज्ञान के इन मॉडलों और परिवर्तित मन के मॉडलों में मिलते हैं। तो, आपके धैर्य के लिए फिर से धन्यवाद, और मैं आपको GM4 पर अगले व्याख्यान में देखूंगा।

धन्यवाद।